PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ४

फ़िलॉटस मेंढक का साहसिक सफ़रनामा

Author: Kartik Shanker
Illustrator: Maya Ramaswamy
Translator: Madhubala Joshi

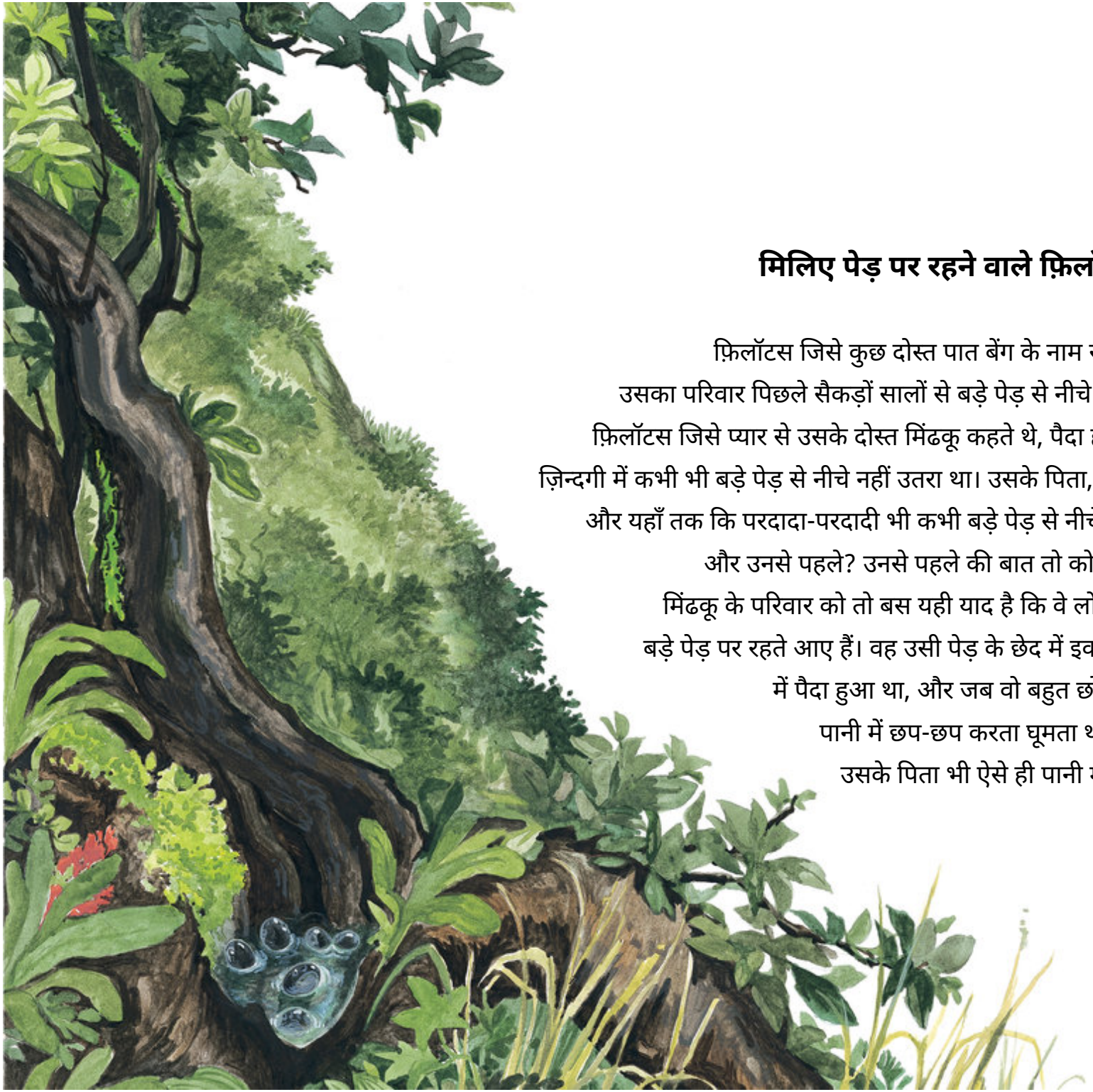

मिलिए पेड़ पर रहने वाले फ़िलॉटस मेंढक से

फ़िलॉटस जिसे कुछ दोस्त पात बेंग के नाम से भी जानते हैं,
उसका परिवार पिछले सैकड़ों सालों से बड़े पेड़ से नीचे ही नहीं उतरा।
फ़िलॉटस जिसे प्यार से उसके दोस्त मिंढकू कहते थे, पैदा होने के बाद से,
ज़िन्दगी में कभी भी बड़े पेड़ से नीचे नहीं उतरा था। उसके पिता, माँ, दादा-दादी
और यहाँ तक कि परदादा-परदादी भी कभी बड़े पेड़ से नीचे नहीं उतरे थे।
और उनसे पहले? उनसे पहले की बात तो कोई नहीं जानता।
मिंढकू के परिवार को तो बस यही याद है कि वे लोग सदा से उसी
बड़े पेड़ पर रहते आए हैं। वह उसी पेड़ के छेद में इकट्ठा हुए पानी
में पैदा हुआ था, और जब वो बहुत छोटा था तो उसी
पानी में छप-छप करता घूमता था। उससे पहले
उसके पिता भी ऐसे ही पानी में छपछपाते थे।

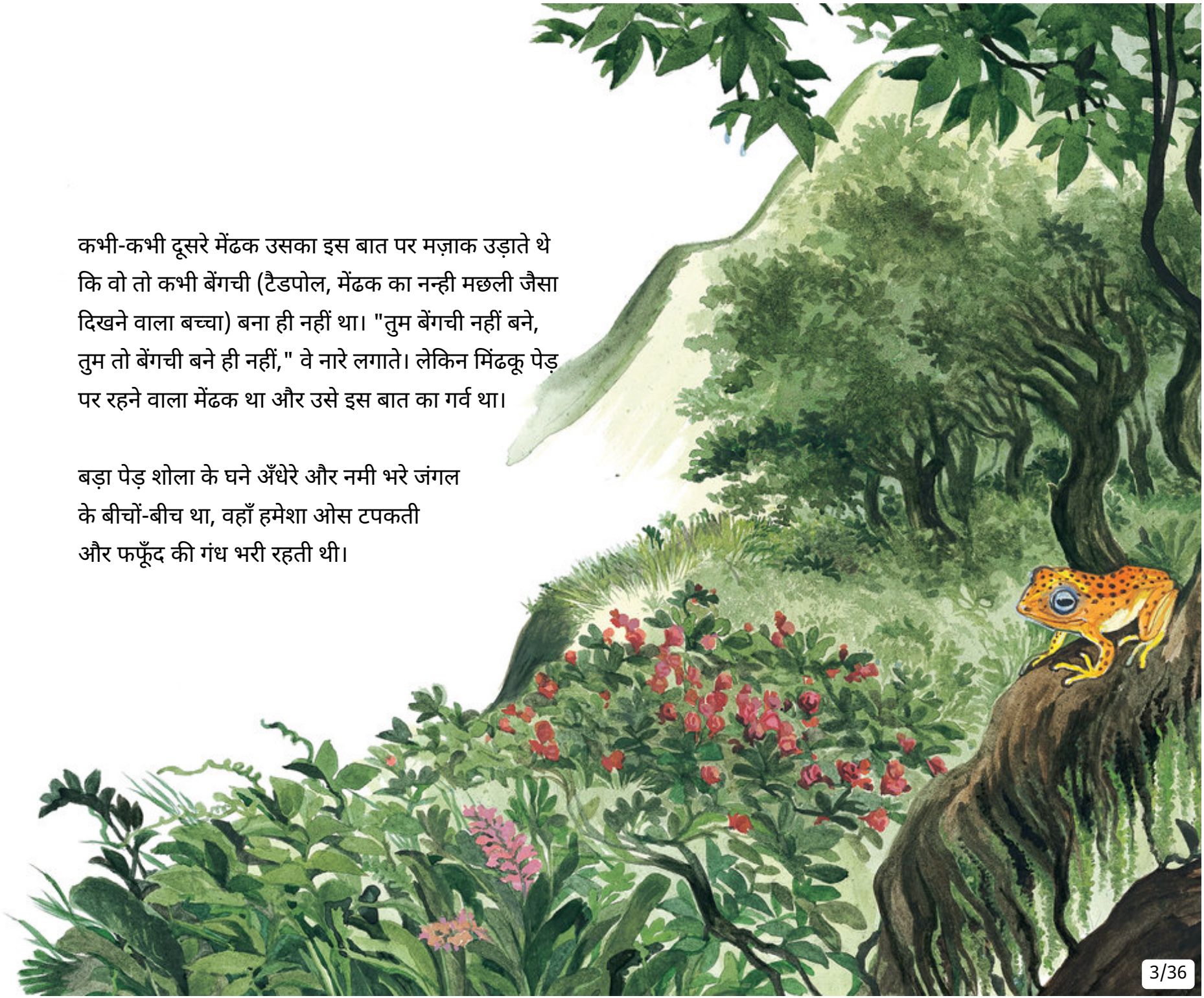

कभी-कभी दूसरे मेंढक उसका इस बात पर मज़ाक उड़ाते थे कि वो तो कभी बेंगची (टैडपोल, मेंढक का नन्ही मछली जैसा दिखने वाला बच्चा) बना ही नहीं था। "तुम बेंगची नहीं बने, तुम तो बेंगची बने ही नहीं," वे नारे लगाते। लेकिन मिंढकू पेड़ पर रहने वाला मेंढक था और उसे इस बात का गर्व था।

बड़ा पेड़ शोला के घने अँधेरे और नमी भरे जंगल के बीचों-बीच था, वहाँ हमेशा ओस टपकती और फफूँद की गंध भरी रहती थी।

शोला के गर्म जंगल और घास के सर्द मैदान

शोला का जंगल एक घाटी के पेंदे में टिका था और लहराती घास से ढकी पहाड़ियों से घिरा था। शोला के जंगल की पतली-सँकरी पटि्टयाँ साँप की तरह बलखाती हुई पहाड़ी ढलानों पर चढ़ती है जहाँ बरसाती धाराएँ बहती हैं।

घास के मैदानों में मौसम चाहे कितना भी कठोर हो जाए, शोला के अंदर मौसम हमेशा ठंडा रहता है। मिंढकू के पिता कहते थे कि घास के मैदान बड़े ही कठोर हैं-वहाँ दिन में जला देने वाली गर्मी होती है और रात को बर्फ़ की तरह जमा देने वाली ठण्ड; लेकिन हमारे शोला में, हमेशा शीतल और नम रहता है इसलिए हमेशा यहीं रहना चाहिए।

मिंढकू और उसके दोस्त अपनी दुनिया के बारे में बातचीत करते हैं

भवानी, बंगीतप्पाल, सीस्परा, नादुगानी, मड्डुप्पमलै, शोला और कुछ आस-पास की जगहें-मिंढकू इन सभी नामों को सुनता पर उसे पता नहीं था कि यह जगहें हैं कहाँ।

लेकिन उसके कुछ दोस्त काफ़ी घूम चुके थे। एक वार्बलर चिड़िया, हर साल हिमालय से उड़ कर आती थी और उसे पश्चिमी घाट के चप्पे-चप्पे के बारे में पता था। पश्चिमी घाट का एक छोटा सा हिस्सा नीलगिरी था जिसका एक भाग मुकुरती था जिसका नन्हा सा टुकड़ा था सिस्परा जहाँ यह पेड़ खड़ा था।

मिंढकू ने दुनिया देखने की ठानी

अपने दोस्तों से बड़े से नीले समुद्र के बारे में सुनते ही मिंढकू ने उसे देखने का इरादा कर लिया। उसके मेंढक दोस्त उस पर हँसे। वार्बलर ने बताया कि बड़ा सा नीला समुद्र तो उस समुद्र के सामने कुछ भी नहीं जो बहुत पहले सर्दियों में यूरोप से आते समय उसने देखा था।

लेकिन मिंढकू ने जाने के लिए कमर कस ली थी। और एक सुबह, वह पेड़ की एक डाल से दूसरी डाल पर कूदता
नीचे उतरा। वह धीरे-धीरे नीचे की ओर सरका, उसके पंजों की गद्दि्याँ पेड़ की छाल को पकड़े थीं। आखिर वह ज़मीन पर पहुँच गया। नम मिट्टी सूखे पत्तों से ढकी थी। छछूँदर सरसराता हुआ उसके पास से गुज़रा। आसपास नीचे घोंघे और इल्लियाँ रेंग रहे थे।

मिंढकू का जी तो किया कि फ़ौरन बड़े पेड़ पर बने अपने सुरक्षित घर में लौट जाऊँ। लेकिन वह फुदकता हुआ शोला
के जंगल के बाहरी छोर की ओर चल दिया।

बाहर खुले में

जैसे-जैसे वह रोशनी के पास पहुँचने लगा, मिंढकू का दिल तेज़ी से धड़कने लगा, "मुझे क्या मिलेगा? क्या यहीं दुनिया खत्म होती है या यहाँ मेंढकों का वह
स्वर्ग है जहाँ भोजन की भरमार है?"

आखिर जब वह वहाँ पहुँचा तो पाया कि वहाँ धुन्ध ही धुन्ध छायी थी। धुन्ध की भारी, नम चादर घास के मैदान पर पसरी थी और मिंढकू कुछ देख नहीं पा रहा था। उसने बहुत दूर कहीं मेंढक के टर्राने की आवाज़ सुनी। पहली बार उसने धीरे से घास के मैदान पर कदम रखा। ठण्ड ने उसे हैरान कर दिया, वहाँ चारों ओर ठण्डी हवा थी, ज़मीन पर ओस जमी हुई थी और डाल से गिरे पत्तों की परत की सुखद गुनगुनाहट की जगह वहाँ बस सूखी घास की सरसराहट ही थी।

ज़रा सी देर के लिए धुन्ध छँटी और मिंढकू ने बहुत हैरान कर देने वाला दृश्य देखा। सामने का पूरा पहाड़ नीला था। वह कुरिंजी के कालीन से ढका हुआ था। कुरिंजी एक छोटी सी झाड़ी होती है जिसमें बारह साल में सिर्फ एक बार फूल आते हैं। और शोला के छोर पर बुराँश के ऊँचे पेड़ों पर चटख लाल रंग के
फूल खिले थे।

बुफो के साथ मुठभेड़

जैसे-जैसे मिंढकू पहाड़ पर नीचे की ओर आया, तेज़ी से बहते हुए पानी की आवाज़ सुनाई देने लगी। कुछ ही मिनटों
में वह एक पतली सी धारा के पास पहुँच गया, जो छोटी सी पहाड़ी से नीचे उतर रही थी। उसके बीच में छोटी-छोटी चट्टानें थीं और चट्टानों से भरे एक कोने में ये बड़ा सा मेंढक बैठा था जैसा मिंढकू ने आज तक नहीं देखा था।

मोटे सेठ सा बुफो मेंढक मस्त और संतुष्ट दिख रहा था। अन्डों से भरी एक लम्बी झिल्ली पानी में तैर रही थी जिस में
से जल्दी ही नन्हीं बुफो बेंगचियाँ निकल आएँगी। बुफो और उसके रिश्तेदार सारे देश में पाए जाते हैं। मैदानों में, जंगलों में, शहरों में, बुफो सब जगह दिखते हैं।

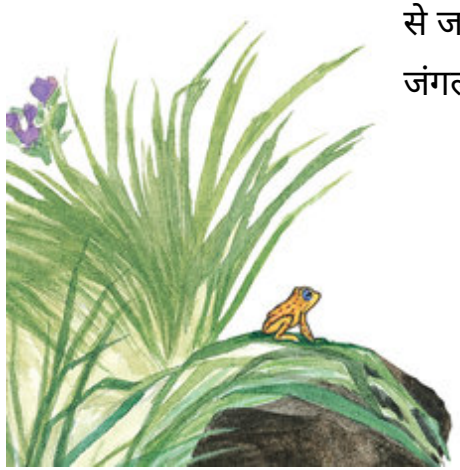

"अजी मेंढक साहब, क्या आप इस दलदल में रहते हैं?" मिंढकू ने पूछा।
"मैं एक भेक यानी टोड हूँ मरगिल्लू!" बुफो ने बड़ी अदा से कहा,
"मैं हर जगह रहता हूँ।"

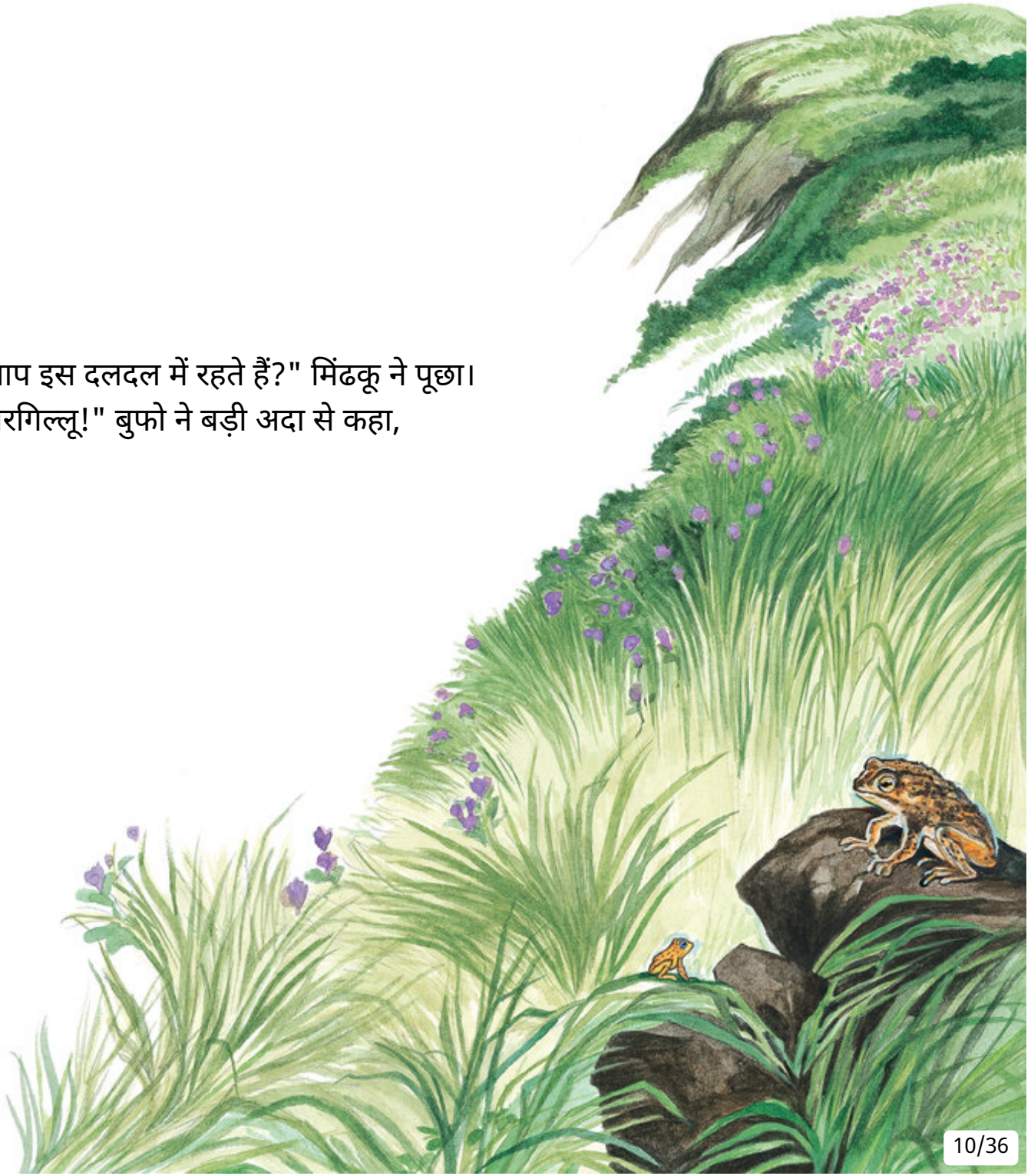

सैली ए, घास के मैदान में रहने वाली गिरगिट

सैली ए का जी घास के मैदान में ही लगता था। बाग-बगीचों में रहने वाले अपने दूसरे गिरगिट रिश्तेदारों की तरह
सैली ए भी जब चाहे अपना रंग बदल लेती थी। जब मिंढकू, उसके पास पहुँचा तो वह हरे-भूरे रंग की बनकर अपने पीछे खड़ी घास जैसी हो गई। कुछ समय बाद जब उसे विश्वास हो गया कि यह नन्हा मेंढक उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाने वाला तो वह फिर से नज़र आने लगी।

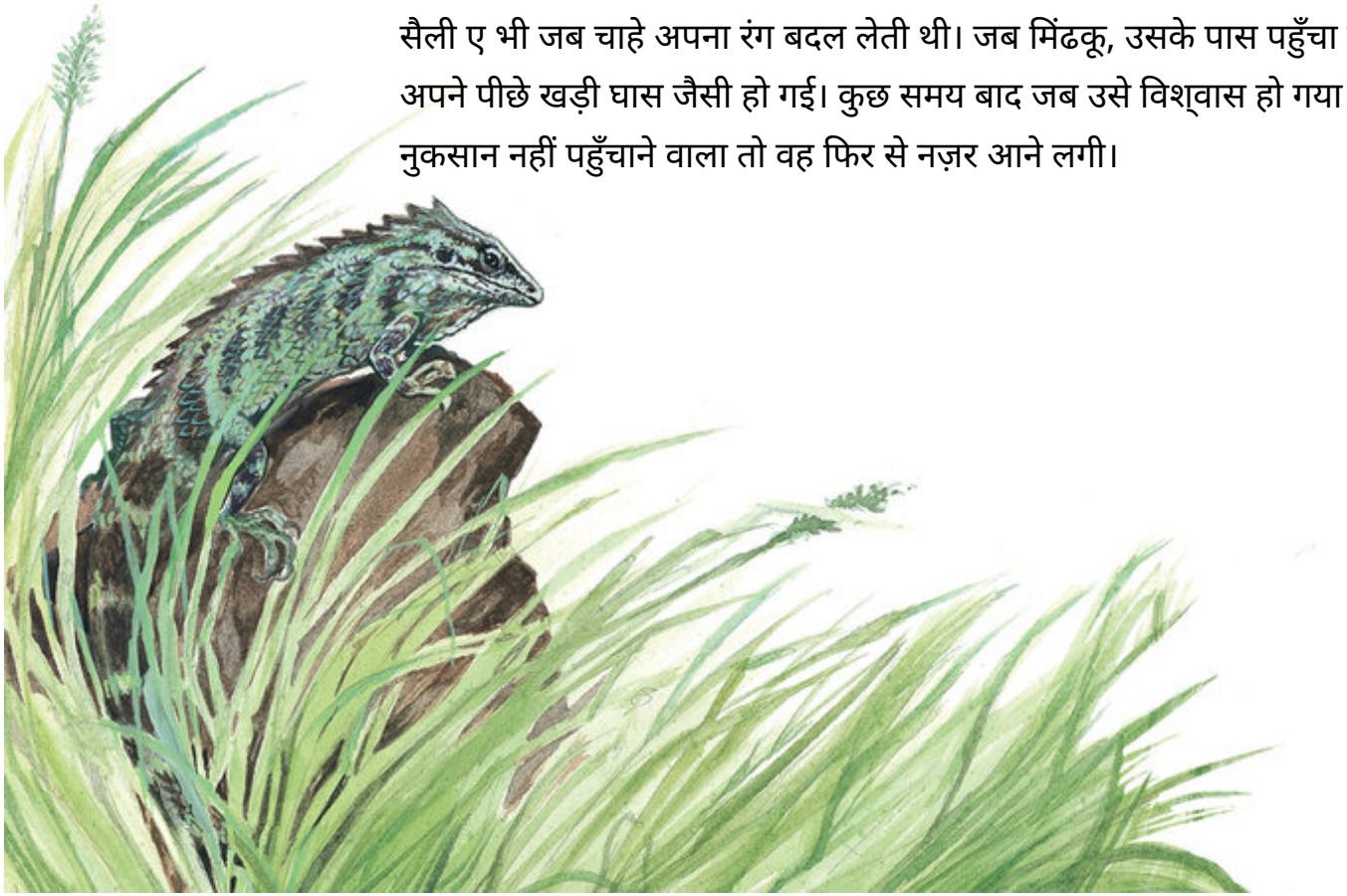

"नमस्ते, कैसी हो? मैं पेड़ पर रहने वाला मिंढकू मेंढक हूँ। मैं बड़े नीले समुद्र को खोज रहा हूँ।" मिंढकू ने कहा।
"आओ मैं तुम्हें रास्ता दिखाती हूँ," सैली ए बोली और छलाँगे मारती पहाड़ की चोटी पर पहुँच गई। मिंढकू भी जल्दी-जल्दी कूदता उसके पीछे चला।

"उस पहाड़ी से नीचे उतरना, दूसरी पहाड़ी पर चढ़ना, दोबारा नीचे उतरना, फिर नदी के साथ-साथ चलते चले जाना फिर छोटी पहाड़ी पर चढ़कर तुम समुद्र को देख पाओगे," उसने बताया।

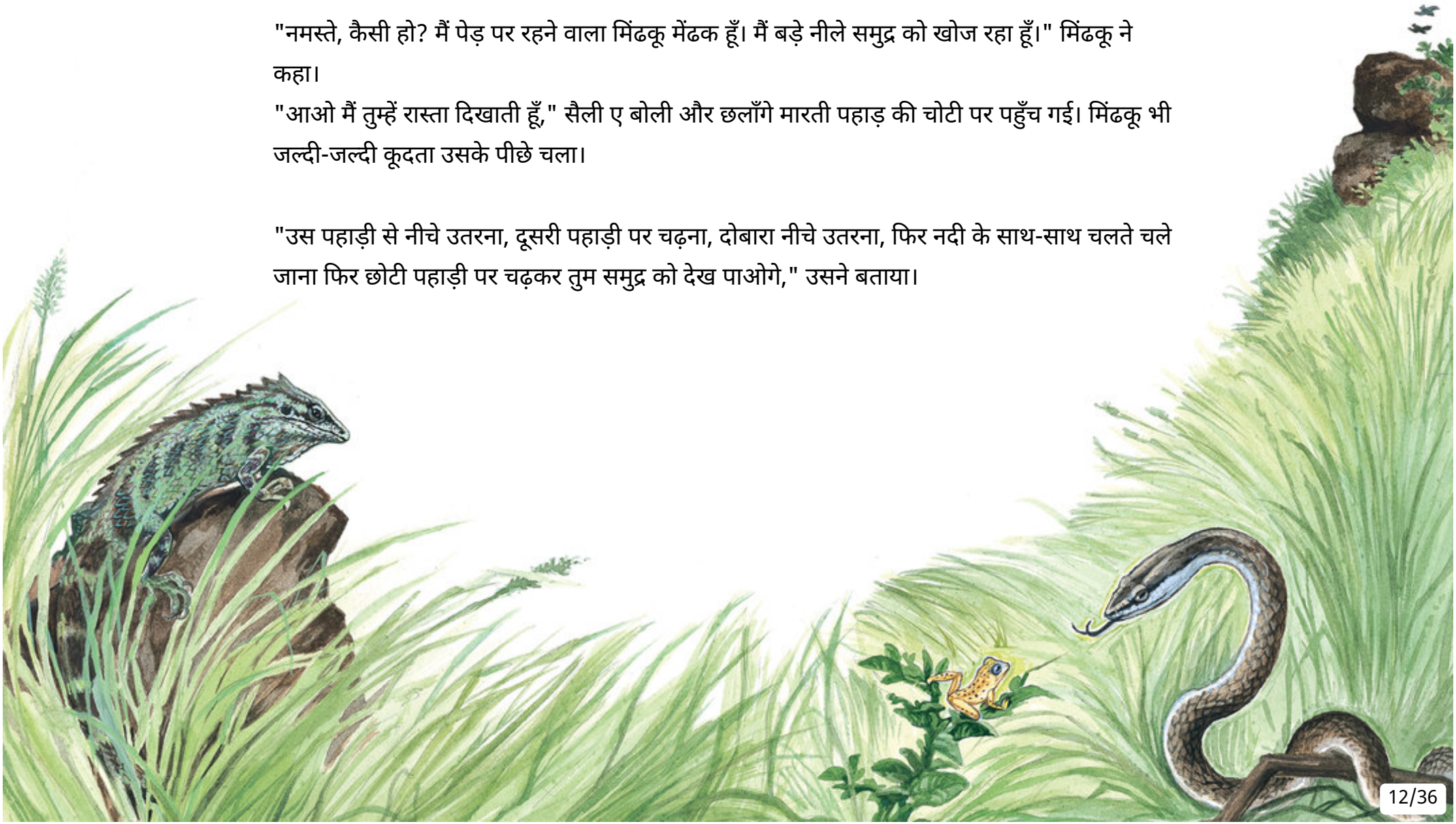

घास के मैदान का साँप अहेटुला

मिंढकू जल्दी-जल्दी कूदता हुआ एक छोटे से रास्ते से बंगीतप्पाल घाटी की तरफ़ चला। वह घास पर लुढ़का, चट्टान पर फिसला और काई पर स्केटिंग करता हुआ घाटी के एकदम बीच में पहुँच गया। पहाड़ों और धुन्ध के बीच मिंढकू को बहुत अकेला महसूस हो रहा था। और अचानक वह उस प्राणी के एकदम सामने पहुँच गया जिससे मेंढक सबसे ज़्यादा डरते हैं।

कुछ ही इंचों की दूरी पर लम्बी, लपलपाती हुई साँप की जीभ और मुँदी सी आँखें, सीधे मिंढकू की आँखों में झाँक
रही थीं। मिंढकू तो डर से बुत बना खड़ा रह गया। लेकिन घास के मैदान के साँप अहेटुला के लिए आज बहुत बढ़िया दिन था। वह अभी-अभी एक टोड को गड़प्प कर चुका था और अब उसे एक हफ्ते तक खाने की ज़रूरत नहीं थी।
वह मज़े-मज़े में सरकता मिंढकू के पास आया और उससे पूछने लगा कि मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ।

मिंढकू ने अपने सफ़र का मक़सद बताया जिस पर अहेटुला ने जीभ लपलपाकर दाद दी। अहेटुला ने मिंढकू से कहा कि तुम मेरे पीछे पहाड़ के ऊपर तक चलो, वहाँ से मैं तुम्हें वह रास्ता दिखा दूँगा जो सीधा समुद्र तक जाता है।

नीला समुद्र

आखिर मिंढकू ने देखा तो पाया कि वह सामने वाली घाटी में है। आखिर बड़ा, बहुत बड़ा, नीला, बेहद नीला समुद्र उसके सामने था। उसकी छोटी-छोटी उँगलियाँ आसपास की पहाड़ियों की तरफ़ फैल रही थीं। मिंढकू आँखें फाड़े
समुद्र के नीलेपन को बहुत-बहुत दूर जा कर, जहाँ धरती खत्म होती है वहाँ, आसमान से मिलते देख रहा था। वो फुदकता हुआ उसकी तरफ़ बढ़ा। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि यह माया नहीं है, जो हवा, सूर्य और धुन्ध के
जादू से बनी है।

और जब वह समुद्र तक पहुँचा तो उसने
डरते-झिझकते अपना पंजा पानी से यूँ छुआया
जैसे समुद्र उसे निगल ही जाने वाला हो।

पानी एकदम ताज़ा और ठंडा था और इसे छूने
से शांति महसूस हो रही थी। मिंढकू ने ऐसा पानी
पहले कभी नहीं देखा था।

धाराओं का पानी तो बौराया सा बहुत तेज़ी से,
भागता था, बहस करता और गिड़गिड़ाता, शैतान
बच्चों या गुस्से से पागल बड़ों की तरह।

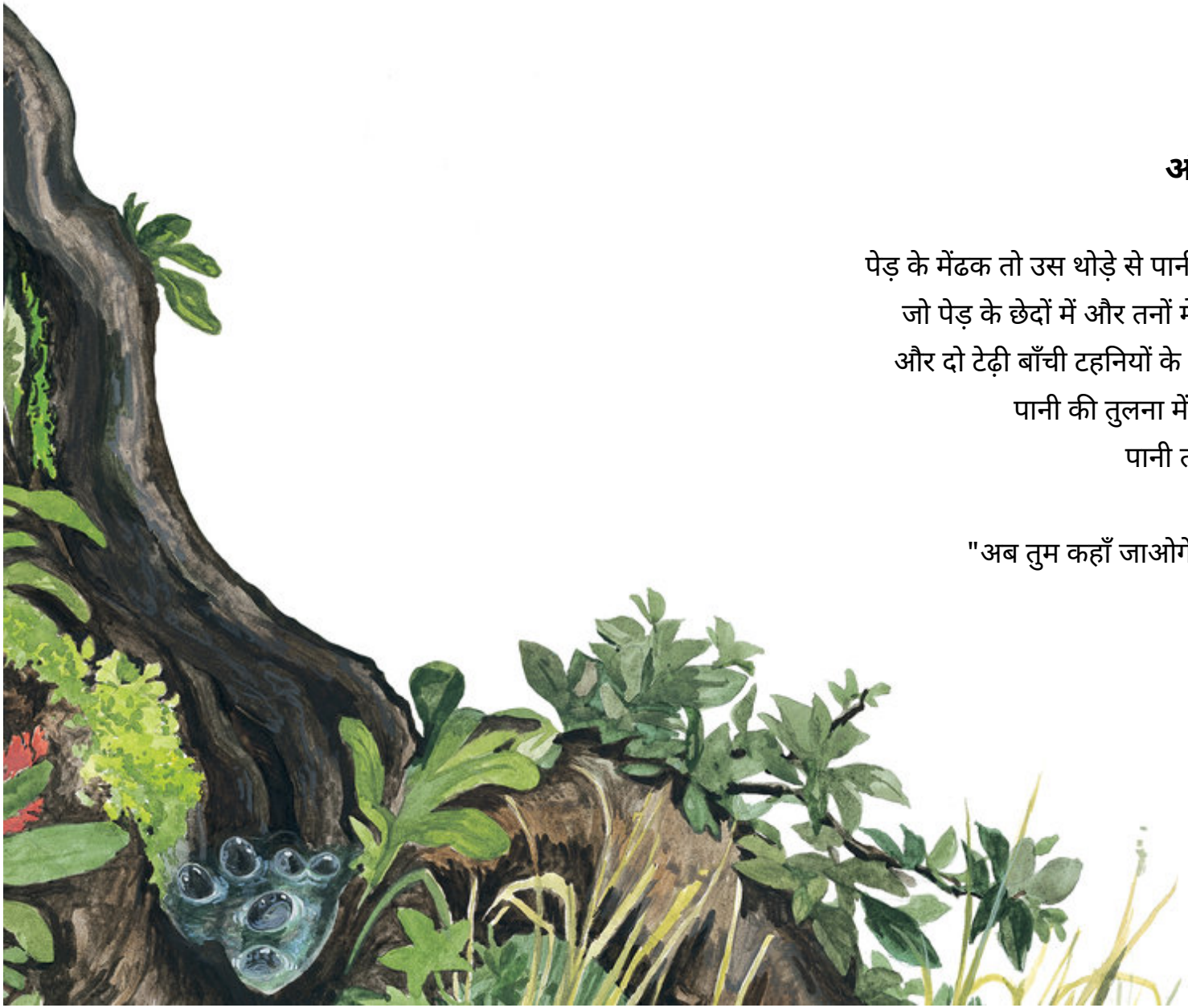

और भी बड़ा समुद्र

पेड़ के मेंढक तो उस थोड़े से पानी से ही खुश रहते थे
जो पेड़ के छेदों में और तनों में जमा हो जाता था,
और दो टेढ़ी बाँची टहनियों के बीच में जमा ज़रा से
पानी की तुलना में इतनी दूर तक फैला
पानी तो पूरा ब्रह्मांड ही था।

"अब तुम कहाँ जाओगे?" अहेटुला ने पूछा।

"पता नहीं," मिंढकू बोला, "मैं समुद्र देखने आया था, और अब वह मैंने देख लिया। शायद अब मैं घर लौट जाऊँगा।"

"लेकिन अभी तो देखने के लिए बहुत कुछ बाकी है," अहेटुला बोला। उसके पुरखे पश्चिम से इस पहाड़ पर आए थे। "अब जैसे कि एक इससे भी बड़ा समुद्र है।"

"और बड़ा समुद्र?" मिंढकू चिल्लाया। "ऐसा कैसे हो सकता है?"

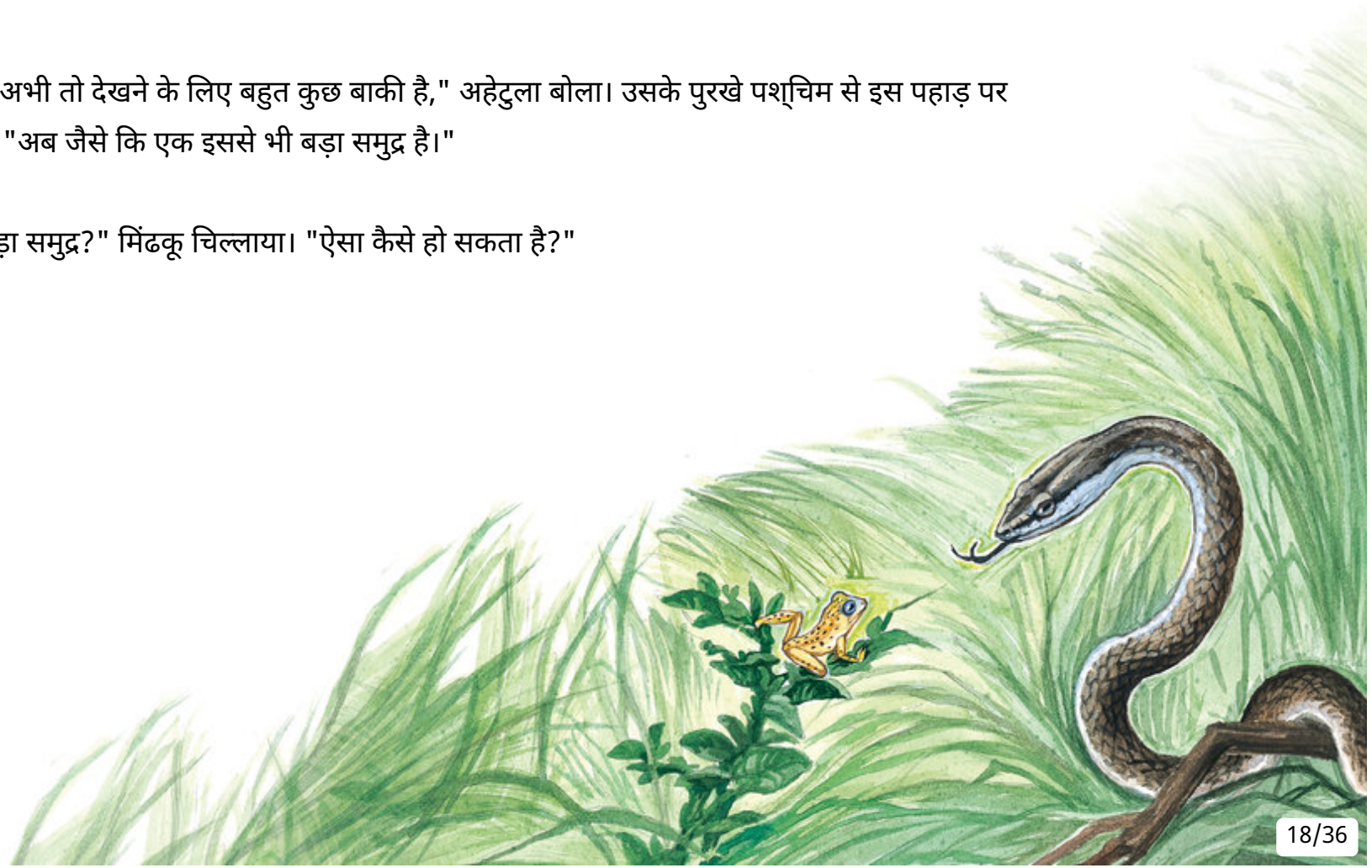

पश्चिमी जल संग्रहण क्षेत्र की ओर

वे पहाड़ की चोटी की ओर चले-लहराता, बलखाता अहेटुला आगे-आगे और फुदकता मिंढकू उससे ज़रा ही पीछे। वे पहाड़ की हथेली में फैले शोला के जंगल के पास से गुज़रे। शोला से आती दालचीनी जैसी जड़ी-बूटियों की जानी-पहचानी खुशबू, गर्मजोशी, गीलेपन ने उन्हें पुकारा। शोला एक स्पंज की तरह है जो बरसात के तेज़ बहाव को सोख कर उसे अपनी हर दरार में, हर चट्टान के बीच जमा कर लेता है, उसे अपनी हर परत, अपनी मिट्टी, अपनी चट्टान में सोख लेता है और फिर उसे थोड़ा-थोड़ा करके भागती हुई धाराओं के रूप में छोड़ता है।

और फिर वो रुक गया क्योंकि उसके सामने एक पत्थर था। लेकिन वो बड़ा मुलायम, गर्म, लगभग भाप छोड़ता, एक अजीब सी गन्धवाला पत्थर था।

"हाथी," अहेटुला बोला।

"क्या यह हाथी है?" वह बोला। उसे लगा कि यह उतना शानदार नहीं है जितना उसने सोचा था।

"नहीं, बुद्धू, यह तो उसका गोबर है। हाथी तो तुमसे सौ गुणा, नहीं-नहीं शायद हज़ार गुणा बड़े होते हैं।"

"लेकिन वो यहाँ कैसे पहुँचते हैं?"

"हाथी कहीं भी जा सकते हैं।" अहेटुला ने भेद भरे ढंग से कहा और आगे बढ़ गया।

पहाड़ की चोटी पर

और तभी बारिश शुरू हो गई। बाल्टी भर-भर कर पानी बरस रहा था
जिससे घास के मैदान में नन्ही-नन्ही धाराएँ बहने लगीं।
"यह बारिश महीनों होती रह सकती है," बारिश में भीगता हुआ
अहेटुला चिल्लाया। "मैं जानता हूँ" मिंढकू खुशी से चीखा,
उसे बारिश बहुत अच्छी लगती थी। लेकिन बारिश से रास्ता
फिसलन भरा और मुश्किल हो गया था। मिंढकू किसी भी पेड़ पर
चढ़ सकता था लेकिन मिट्टी और घास से पार पाना कठिन था।
बहुत ही देर बाद वे ऊपर पहुँच पाए। चारों ओर गाढ़ी धुन्ध छायी थी।
मिंढकू ने आह भरी 'लगता है मेहनत बेकार ही गई।'
लेकिन तभी धुन्ध छँट गई।

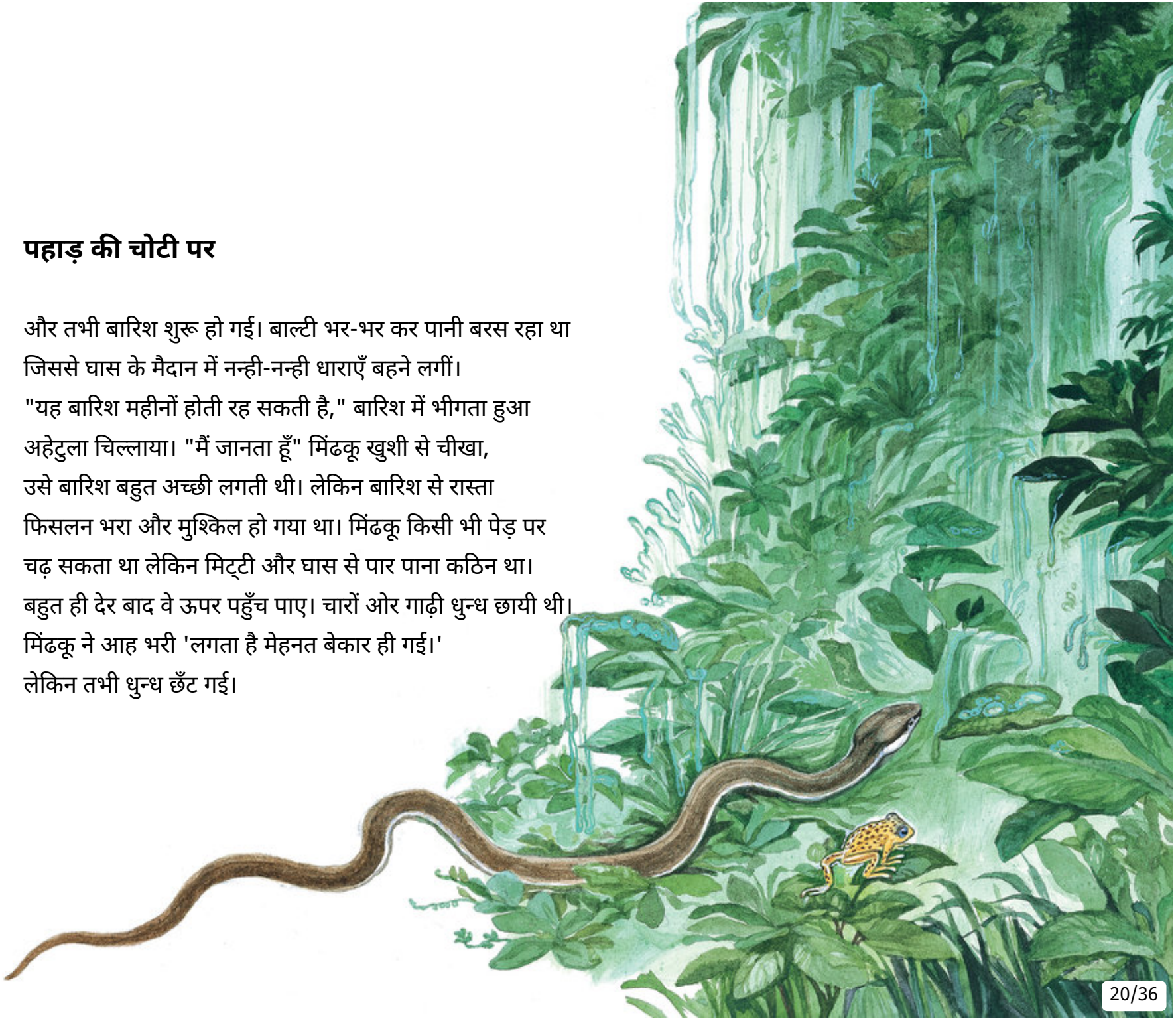

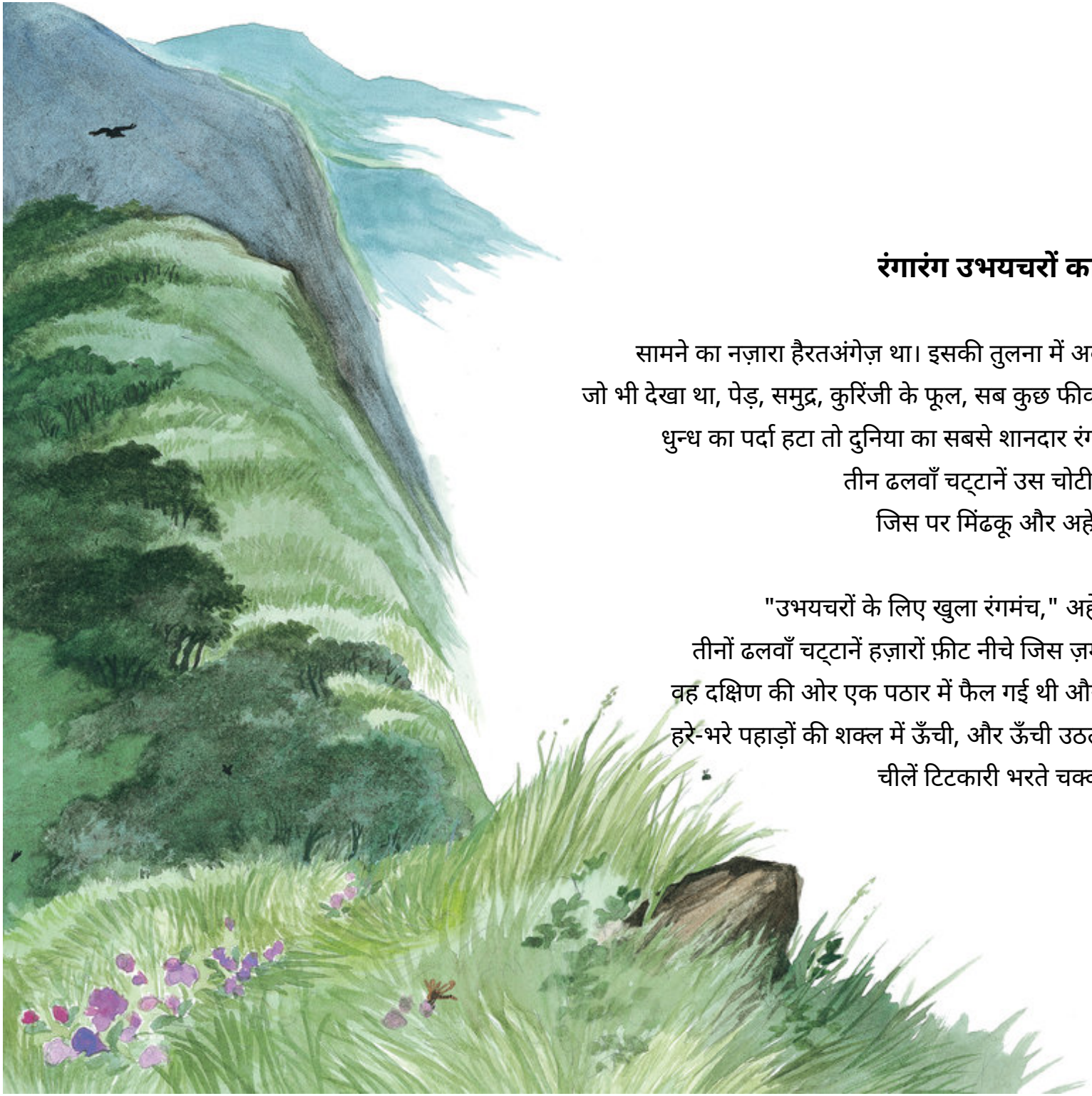

रंगारंग उभयचरों का खुला रंगमंच

सामने का नज़ारा हैरतअंगेज़ था। इसकी तुलना में अब तक मिंढकू ने
जो भी देखा था, पेड़, समुद्र, कुरिंजी के फूल, सब कुछ फीका लग रहा था।
धुन्ध का पर्दा हटा तो दुनिया का सबसे शानदार रंगमंच सामने था।
तीन ढलवाँ चट्टानें उस चोटी को घेरे हुए थीं,
जिस पर मिंढकू और अहेटुला बैठे हुए थे।

"उभयचरों के लिए खुला रंगमंच," अहेटुला बुदबुदाया।
तीनों ढलवाँ चट्टानें हज़ारों फ़ीट नीचे जिस ज़मीन से जुड़ी थीं
वह दक्षिण की ओर एक पठार में फैल गई थी और उत्तर की ओर
हरे-भरे पहाड़ों की शक्ल में ऊँची, और ऊँची उठती चली गई थी।
चीलें टिटकारी भरते चक्कर लगा रही थीं।

पश्चिम दिशा नारंगी रंग में रंग गई। अस्त होते सूर्य ने पूरे दृश्य को एक सुन्दर, शांत रोशनी से नहला दिया। जब तक शाम धुँधलके में बदली और धुँधलका अँधेरे में, वे वहीं छोटी सी पहाड़ी पर पश्चिम दिशा की ओर देखते बैठे रहे। दूर, बहुत दूर एक रोशनी की नन्ही सी कौंध झलकी। "उस रोशनी के पास ही समुद्र है," अहेटुला बोला, "और वो इस दुनिया के आखिरी छोर तक फैला है।"

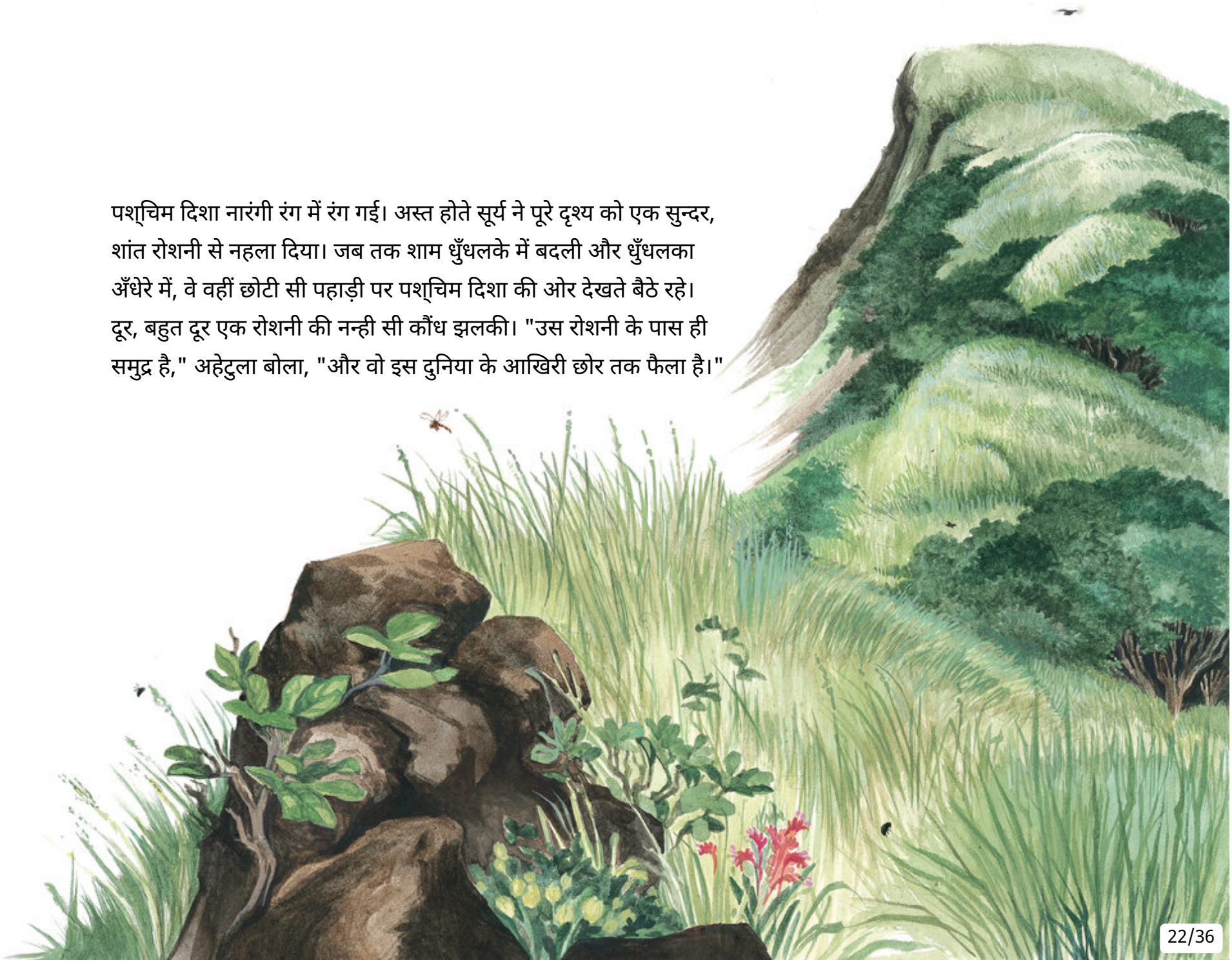

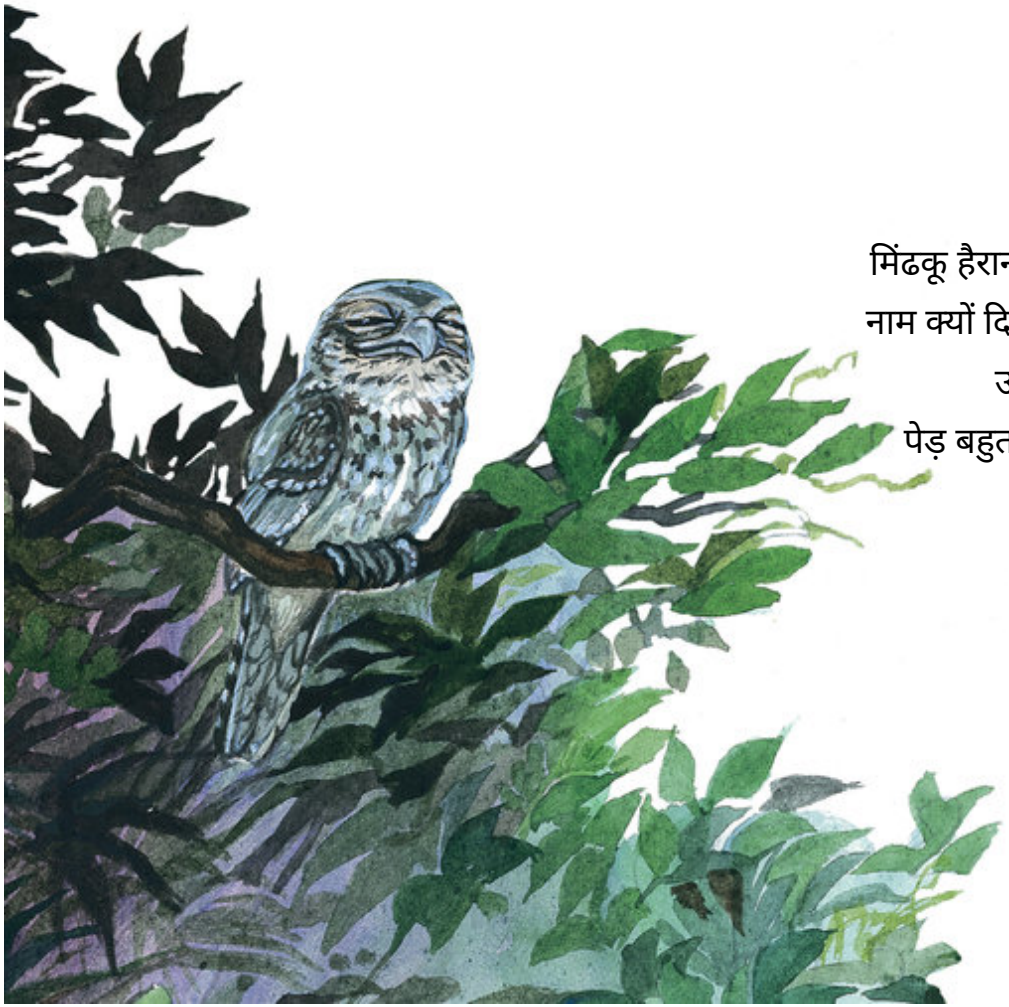

सायलेण्ट वैली की तरफ़ उतराई

मिंढकू ने इरादा कर लिया कि बड़े समुद्र तक ज़रूर जाएगा
लेकिन अहेटुला और आगे नहीं जाना चाहता था।
उसने उसे सायलैण्ट वैली का रास्ता दिखा दिया।

मिंढकू हैरान था कि उस घाटी को सायलैण्ट वैली यानि मौन घाटी जैसा
नाम क्यों दिया गया है। लेकिन कुछ देर में ही उसे समझ में आ गया कि
उसका नाम ऐसा क्यों है। घाटी में एकदम सन्नाटा छाया था।
पेड़ बहुत बड़े-बड़े थे, ऊपर मौजूद शोला के पेड़ों से एकदम अलग।
और वह जितना नीचे की तरफ़ बढ़ रहा था
पेड़ और भी ज़्यादा बड़े होते जा रहे थे।

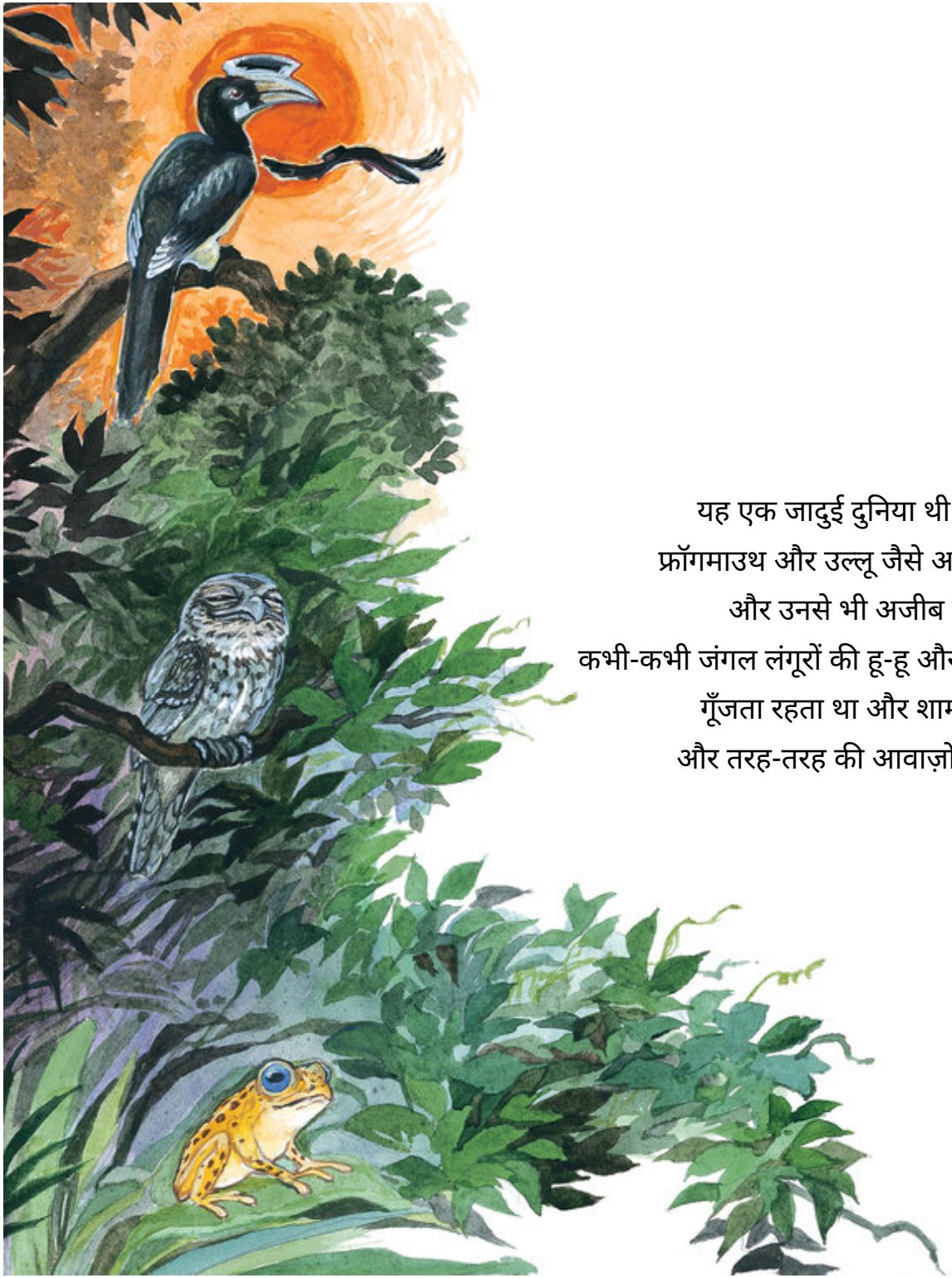

यह एक जादुई दुनिया थी यहाँ धनेश,
फ्रॉगमाउथ और उल्लू जैसे अजीब से पक्षी थे
और उनसे भी अजीब जानवर।
कभी-कभी जंगल लंगूरों की हू-हू और बन्दरों की आवाज़ों से
गूँजता रहता था और शाम को चीखों
और तरह-तरह की आवाज़ों से भर जाता।

कुछ नए मेंढक दोस्त

बहुत ऊपर, पेड़ों की फुनगियों में मिंढकू ने चिड़ियों की आवाज़ें सुनीं, ऐसी ही चिड़ियाएँ उसने बड़े पेड़ पर अपने घर
के आसपास उड़ती हुई देखी थीं। उसने तेज़ी से भागते पानी में रहने वाले निक्टी जैसे बहुत से मेंढक देखे जो पानी में डूबे पत्थरों के बीच रहना पसन्द करते हैं। तेज़ी से आने वाले पानी के छपाके को झेलती चट्टान की सतह से चिपटे
वे दरारों से टर्राते रहते हैं और धारा के पानी में तैरती गीली पत्तियों पर अन्डे देते हैं।

तभी उसने ऐसी अजीब आवाज़ सुनी, जैसी पहले कभी नहीं सुनी थी। ऐसा लगता था कि वह धरती के पेट से आ रही थी। वह मेंढक की आवाज़ से काफ़ी मिलती थी, और नहीं भी मिलती थी।

किस्सा गुब्बारा मेंढक का

उसने देखा कि एक अजीब सा प्राणी उसकी तरफ़ बढ़ा आ रहा है। ऐसा अजीब जानवर उसने आज तक नहीं देखा था। वह काफ़ी बेडौल और बदसूरत लग रहा था और उपजाऊ मिट्टी जैसे जामनी रंग का था। ऐसा लगता था कि वो आगे को बह रहा है बजाए चलने और कूदने के। लगभग वैसे ही जैसे कि मिट्टी का एक भाग एक अजीब मेंढक की शक्ल में जी उठा हो। उसकी सुअर जैसी नुकीली थूथन के अलावा मिंढकू को उसमें और कुछ भी नज़र नहीं आया।

अपने सुरक्षित ठिकाने से मिंढकू ने उस जानवर को आवाज़ दी। वह घबरा कर एक गुब्बारे की तरह फूल गया और अपनी चुँधियाई सी आँखों से चारों
तरफ़ देखने लगा।

"तुम कौन हो?" मिंढकू ने हिम्मत जुटाई।

उसे सावधानी से देखते हुए उस प्राचीन प्राणी ने जवाब दिया, "मैं इस जंगल का सबसे बूढ़ा मेंढक हूँ। मेरे पूर्वज यहाँ सबसे पहले आए थे। मुझे नासिका कहते हैं। मैं ज़्यादातर ज़मीन के बहुत नीचे रहता हूँ।"

"वहाँ नीचे बहुत अकेलापन होगा, और अँधेरा और नमीभरी ठण्डक भी," मिंढकू बोला।

नासिका मुस्कराया लेकिन उसके पतले मुँह के कारण मुस्कराहट मुश्किल से ही दिखी। "नीचे एक बहुत ही भरापूरा संसार है," वह बोला। "वहाँ केंचुए, छोटे-छोटे कीड़े, गुबरैले, मकड़ियाँ, तिलचट्टे, बिच्छू और यहाँ तक कि साँप भी होते हैं।"

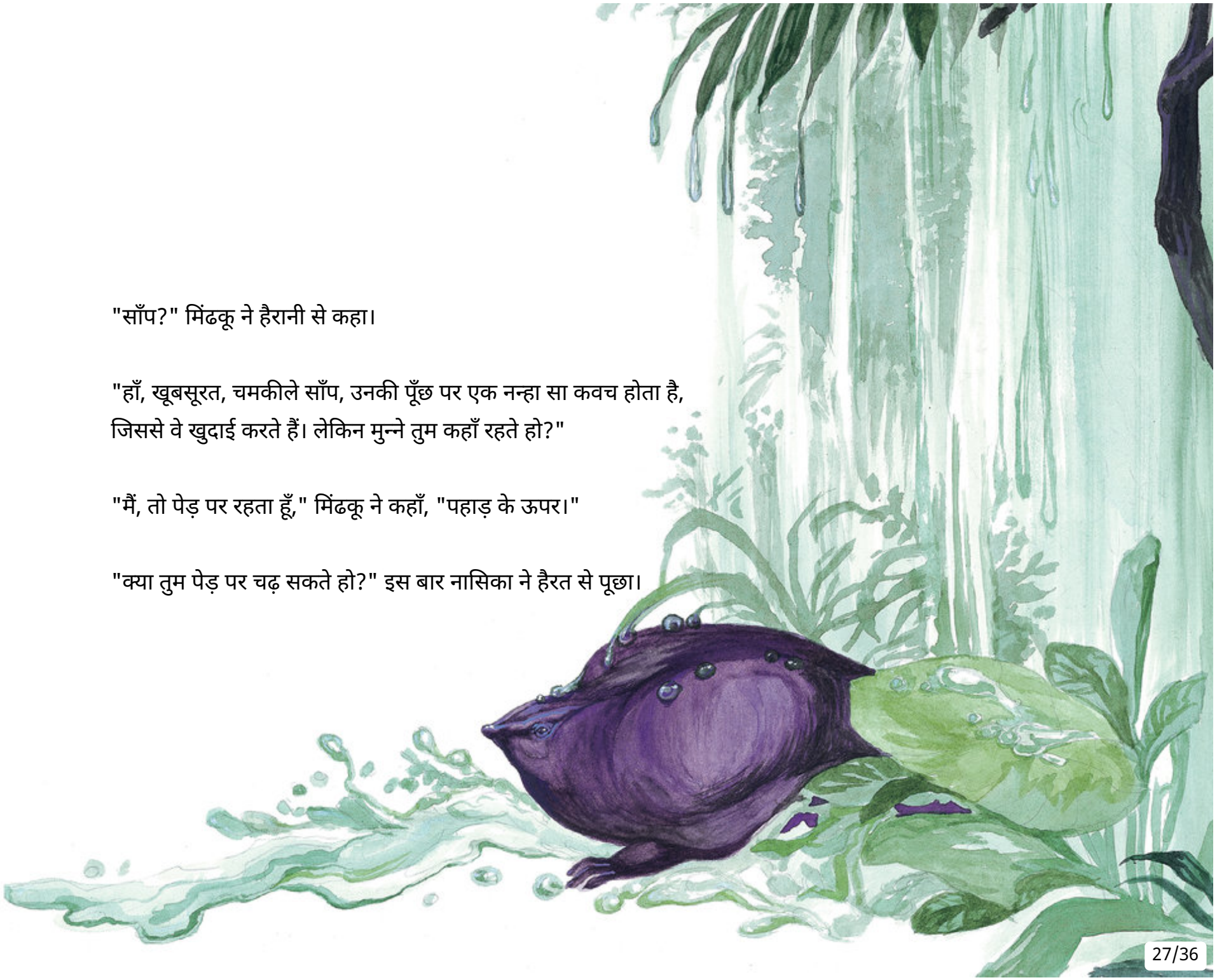

"साँप?" मिंढकू ने हैरानी से कहा।

"हाँ, खूबसूरत, चमकीले साँप, उनकी पूँछ पर एक नन्हा सा कवच होता है,
जिससे वे खुदाई करते हैं। लेकिन मुन्ने तुम कहाँ रहते हो?"

"मैं, तो पेड़ पर रहता हूँ," मिंढकू ने कहाँ, "पहाड़ के ऊपर।"

"क्या तुम पेड़ पर चढ़ सकते हो?" इस बार नासिका ने हैरत से पूछा।

उड़ने वाले मेंढक, छिपकलियाँ और साँप

मिंढकू ने सोचा कि पेड़ पर चढ़ कर ताज़ा आकाश देखते हुए आगे की योजना बनाई जाए। वह चढ़ता-चढ़ता पेड़ की फुनगी पर पहुँच गया। एक बादल ने घाटी को ढका हुआ था, धुएँ की धज्जियाँ पेड़ों की चोटियों को ढके हुए थीं, बादलों के छोटे-छोटे घेरे प्रभामण्डलों की तरह बूढ़े पेड़ों पर मँडरा रहे थे।

उड़ते हुए रंगों के कतरों ने मिंढकू के अजीबोग़रीब ख़यालों में खलल डाला। उसने सोचा कि यह कुछ और चिड़ियाएँ हैं, लेकिन अचानक, एक मेंढक उसके साथ आ बैठा।

वह दंग रह गया-उड़ने वाला मेंढक! "मैं राको हूँ," उड़ने वाले मेंढक ने कहा। जल्दी ही राको के दोस्त उड़ने वाली छिपकली ड्रेको और उड़ने वाला साँप क्रिसोपिलीआ उड़ते हुए उनसे मिलने पहुँच गए। और फिर वे कूदने और उड़ने में मस्त हो गए।

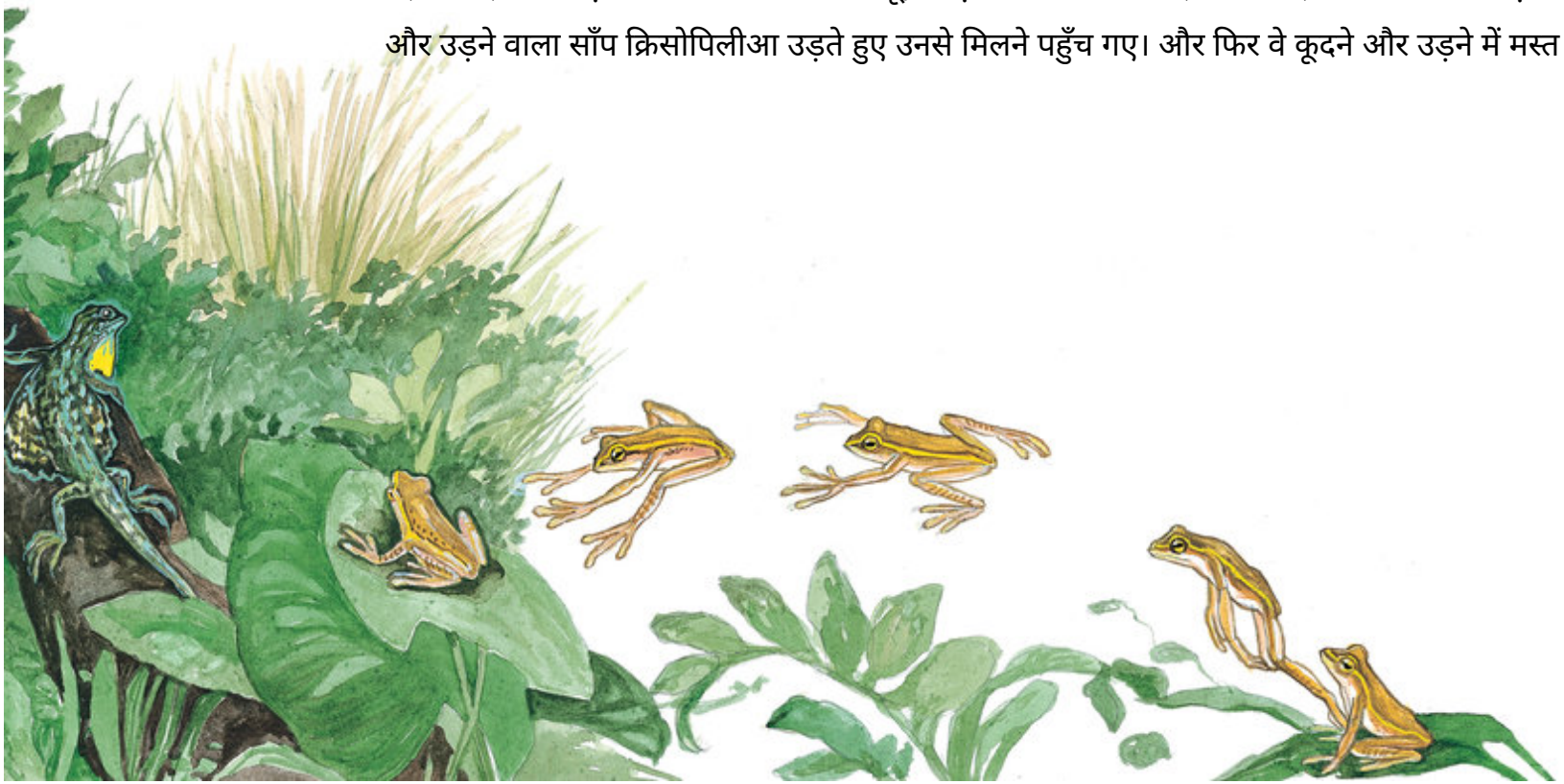

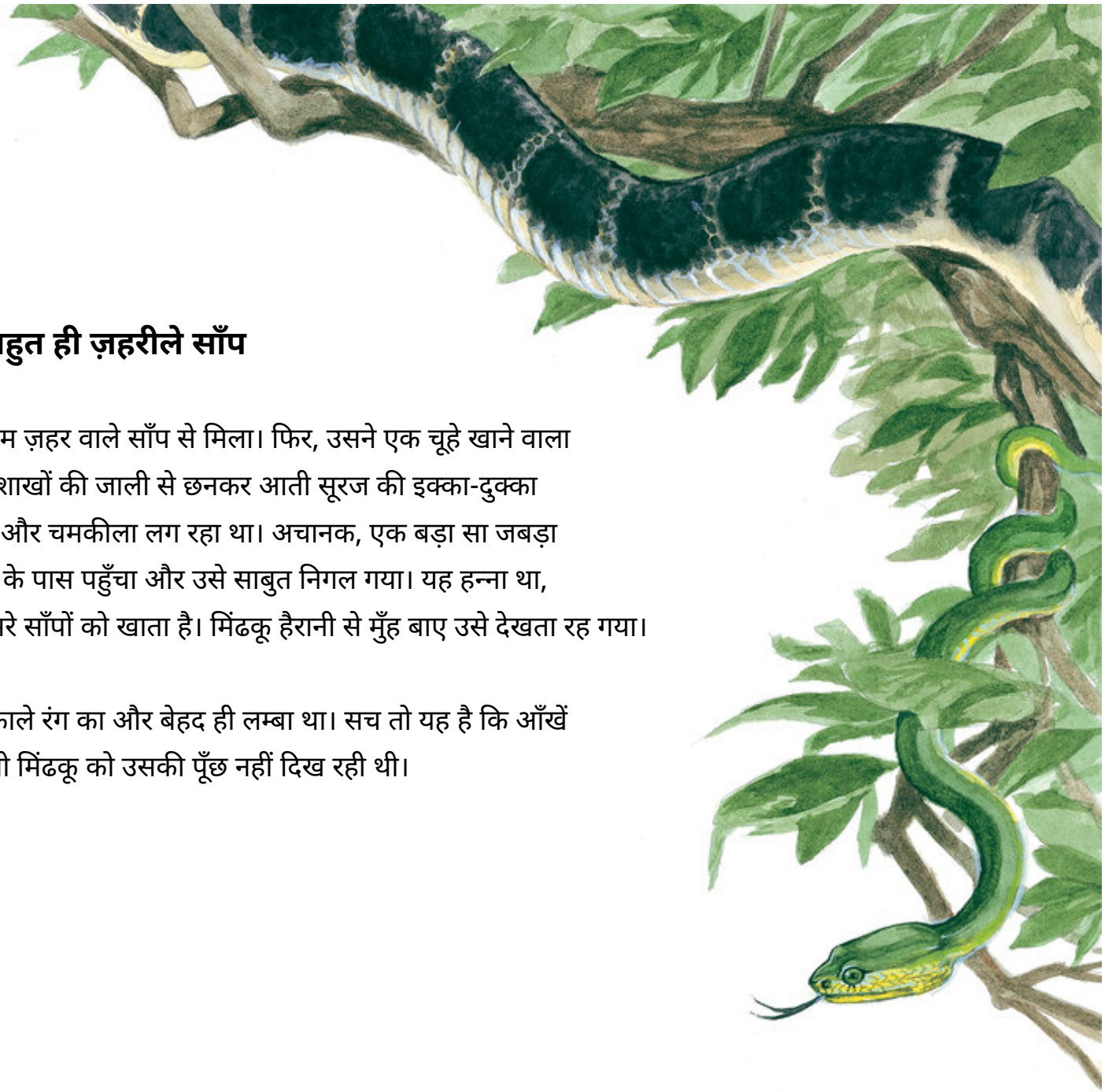

कम ज़हर वाले और बहुत ही ज़हरीले साँप

मिंढकू बैम्बू पैम्बू नाम के कम ज़हर वाले साँप से मिला। फिर, उसने एक चूहे खाने वाला साँप देखा जो पत्तियों और शाखों की जाली से छनकर आती सूरज की इक्का-दुक्का किरणों की रोशनी में ताँबई और चमकीला लग रहा था। अचानक, एक बड़ा सा जबड़ा चूहे खाने वाले साँप के सिर के पास पहुँचा और उसे साबुत निगल गया। यह हन्ना था, सबसे ज़हरीला साँप जो दूसरे साँपों को खाता है। मिंढकू हैरानी से मुँह बाए उसे देखता रह गया।

हन्ना चमकीला पीले और काले रंग का और बेहद ही लम्बा था। सच तो यह है कि आँखें फाड़-फाड़ कर देखने पर भी मिंढकू को उसकी पूँछ नहीं दिख रही थी।

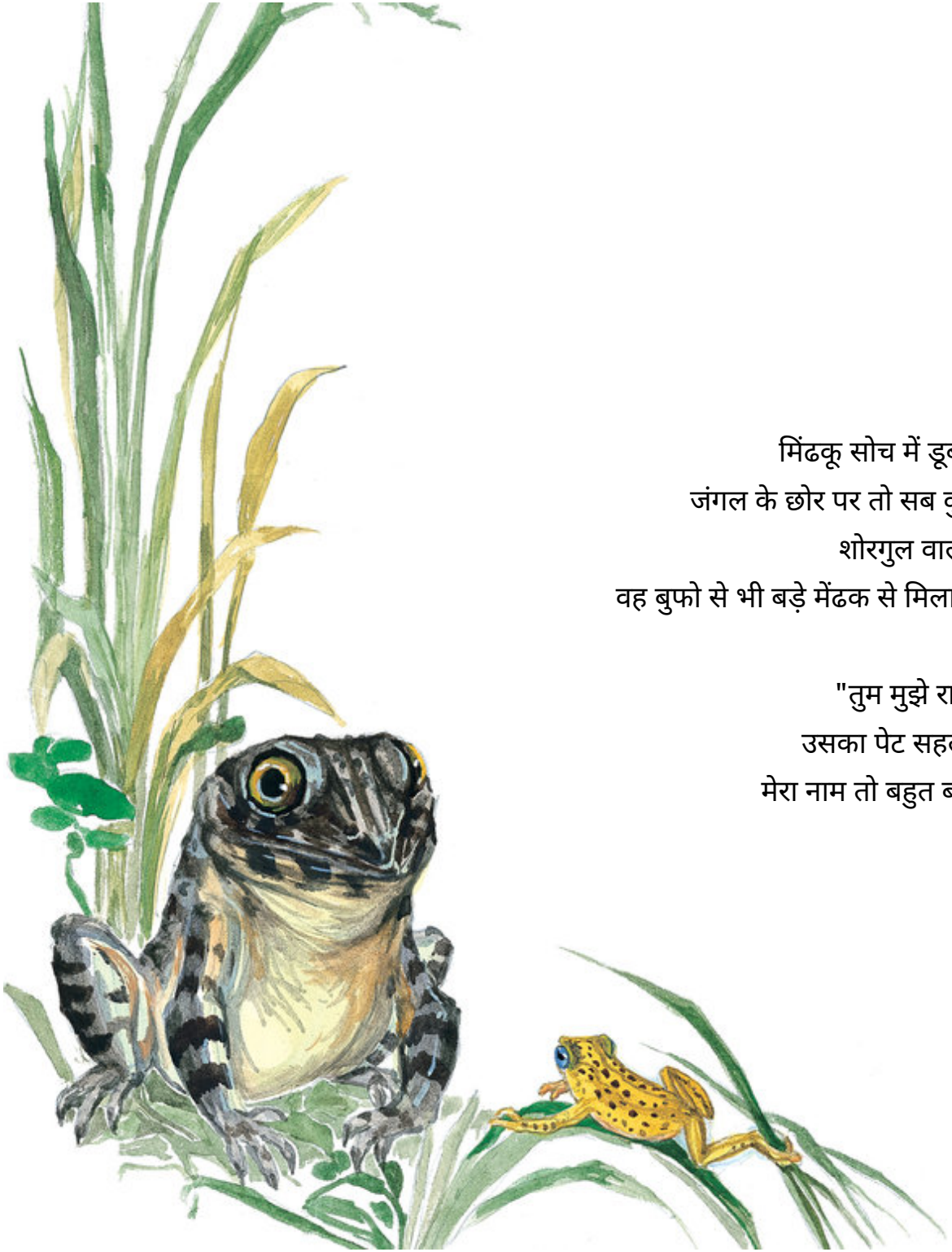

राना का दर्शन शास्त्र

मिंढकू सोच में डूबा था कि उसे अभी और कितना चलना होगा।
जंगल के छोर पर तो सब कुछ बहुत ही अजीब सा लग रहा था - उजाड़,
शोरगुल वाला, जीवों से भरा हुआ। एक मैदान के किनारे,
वह बुफो से भी बड़े मेंढक से मिला। लेकिन वह खासा खुशमिज़ाज लग रहा था।

"तुम मुझे राना कह सकते हो," मिंढकू से गले मिलते और
उसका पेट सहलाते वह बोला, "यह मेरा असली नाम नहीं है।
मेरा नाम तो बहुत बड़ा है और तुम्हें उसे बोलने में दिक्कत होगी।"

राना ने उसे बताया कि समुद्र तो बहुत दूर है और रास्ते में बहुत ख़तरे हैं। पेड़ तो बहुत ही कम हैं। जहाँ पहले कभी जंगल होते थे, वहाँ अब खेत या शहर हैं। असली समुद्र और उस तक पहुँचने वाला रास्ता मेढ़कों के लिए तो
बिल्कुल ठीक नहीं है।

"घर का छोटा सा समुद्र दूसरे संसार के बड़े समुद्र जितना ही बड़ा और शानदार होता है," उसने कहा।

राना ने कहा, "इतने रोमांचक और साहसिक सफ़र के बाद अब तुम्हें अपने घर लौट जाना चाहिए।"

मिंढकू घर को चला

मिंढकू ने जान लिया था कि दुनिया बहुत अजीब और ख़तरों से भरी है। उसे पानी की वह तेज़ धारा अच्छी नहीं लगी जहाँ निक्टी रहता है, और वह नासिका की तरह मिट्टी के नीचे भी नहीं रह सकता। उसे तो पेड़ की चोटी ही भाती है। पहाड़ों के ऊपर।

और अब घर लौटाने की घड़ी आ पहुँची है। फिलॉटस मेंढक दुनिया भर में नहीं घूमा लेकिन वह जितनी दूर तक गया उतनी दूर तक तो पेड़ पर रहने वाला कोई भी मेंढक शायद ही कभी गया था। पेड़ का मेंढक मिंढकू यानि फ़िलॉटस पहाड़ों की ओर वापस चल दिया। उसे बड़े पेड़ पर अपने दोस्तों और परिवार के पास वापस जो पहुँचना था।

जानकारी

पश्चिमी घाट: पश्चिमी घाट पहाड़ों की एक लम्बी श्रृंखला है जो भारत के पश्चिमी समुद्र तट के साथ-साथ दक्षिणी प्रायद्वीप से हो कर महाराष्ट्र में ताप्ती नदी तक जाती है।

शोलाऔरघासकेमैदान: पश्चिमी घाट के दक्षिणी भाग में, पहाड़ों के एकदम ऊपर एक अनोखी प्राकृतिक रूप से बनी दुनिया है जिसमें लहराते घास के मैदान हैं और उनमें कहीं-कहीं बौने रह गए पेड़ों के छोटे-छोटे सदाबहार जंगल हैं जिन्हें शोला के नाम से जाना जाता है।

मेंढक और भेक: भेक या टोड एक तरह का मेंढक ही होता है। आमतौर पर भेक की खाल सूखी, सख्त और मस्सेदार होती है। वे दूसरे मेंढकों की तुलना में ज़मीन पर ज़्यादा रहते हैं, लेकिन अण्डे ज़्यादातर पानी में ही देते हैं।

वैज्ञानिक नाम:
पौधे और जानवर लैटिन भाषा के अपने वैज्ञानिक नामों से ही जाने जाते हैं। इन नामों में उनका जीनस (वर्ग) और स्पीशीज़ (जाति) शामिल होते हैं (उदाहरण के तौर पर *होमो सैपिएन्स* मनुष्यों के लिए प्रयोग होता है)। वैज्ञानिक नाम कभी-कभी वर्गीकरण विज्ञान और किसी प्रजाति के अन्य प्रजातियों से अलग होने वाले विकास की नई खोजों के कारण बदलते भी हैं।

मंच पर उपस्थिति के अनुसार पात्रों का परिचय

फ़िलॉटसः

फ़िलॉटस पेड़ पर रहने वाले मेंढकों या बुश मेंढकों का समूह है जो भारत, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्वी एशिया में पाए

जाते हैं। दूसरे मेंढकों के विपरीत फ़िलॉटस स्पीशीज़ के अधिकाँश मेंढक ऐसे अंडे देते हैं जिनका सीधा विकास होता है। यानि वे बेंगची न बन के अंडे में से पूरे मेंढक बन के निकलते हैं। पश्चिमी घाट के ज्यादातर बुश मेंढक अब *राओरचेस्टीस* जीनस के हैं।

बुफोः

बुफो भेक या टोड का ही एक जीनस है। भारत में पाए जाने वाले टोड लम्बे अर्से तक *बुफो मैलनॉसटिक्ट्स* के नाम से जाने जाते रहे, अब यह डट्टाफ़्रीनस मैलनॉसटिक्ट्स के नाम से जाने जाते हैं।

सैली एः

सैलिआ अगामिड गिरगिट हैं। यह बगीचे में पाये जाने वाले गिरगिट कोलैटिस के परिवार का हिस्सा हैं।

अहेटुलाः

घास में पाए जाने वाले साँप का एक जीनस है। भारत में सभी जगह पाया जानेवाला पेड़ों पर चढ़ने वाला साँप भी *अहेटुला* जीनस की ही एक स्पीशीज़ का हिस्सा है।

नासिका:

नासिकाबट्राकस सह्याद्रेनेसिस नाम के मेंढक की खोज कुछ बरस पहले ही हुई है। माना जाता है कि यह भारत में पाया जाने वाला सबसे पुराना मेंढक है, जिसका मतलब है कि उस में १० करोड़ से भी अधिक बरसों से कोई बदलाव नहीं आया है। उसके सबसे करीबी सम्बन्धी सेशेल्स में रहते हैं।

निक्टी:

निक्टीबट्राकस तेज़ बहाव में रहने वाले मेंढक हैं जो पश्चिमी घाट की तेज़ी से बहती हुई धाराओं में रहते हैं।

राको:

राकोफोरस भी पेड़ों पर रहने वाले मेंढक हैं जिनमें से कुछ विसर्पण की योग्यता के लिए जाने जाते हैं। वे झाग से जलाशयों के ऊपर लटकती पत्तियों पर अपने घोंसले बनाते हैं।

ड्राको:

ड्राको एक छिपकली है और *क्रिसोपिलीआ* एक साँप है। दोनों अपनी विसर्पण की क्षमता के लिये जाने जाते हैं।

हन्ना:

नाग अथवा *ओफिओफैगस हन्ना*, संसार का सबसे लम्बा व ज़हरीला साँप है, जो सिर्फ दूसरे साँपों को खाता है।

बैम्बू पैम्बू:

यह आमतौर पर पाए जाने वाले, हल्के ज़हर वाले बैम्बूपिट वाइपर नाम के साँप हैं।

राना:

राना मेंढकों का एक जीनस है। अब यह कई अलग-अलग नामों से जाना जाता है। साँड मेंढक (बुलफ्रॉग), जिसे पहले *राना टाइगरीना* के नाम से जाना जाता था, अब उसे *होपलोबैट्राकस टाइगरीनस* के नाम से जाना जाता है। यह भारत में पाया जाने वाला सबसे बड़ा मेंढक है।

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: फ़िलॉटस मेंढक का साहसिक सफ़रनामा is translated by Madhubala Joshi . The © for this translation lies with Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'The Adventures of Philautus Frog', by Kartik Shanker . © Pratham Books , 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Philautus Mendhak Ka Sahasik Safarnaama' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. The development of this book has been supported by HDFC Asset Management Company Limited (A joint Venture with Standard Life Investments). www.prathambooks.org

Images Attributions:

Cover page: A little frog sitting alone on a tree bark amid a forest above a valley by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: A tree stem with surrounding greenery by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: A little frog sitting alone on a tree bark in a forest by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Shrub with flowers in the corner, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: A little frog sitting on a leaf amid countless trees by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A shrew walking on a thin branch by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: A shrew and a frog in a forest by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: One small and one huge frog looking at each other, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: A big and a small frog talking to each other in a forest by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: A lizard perched on a rock by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 12: A lizard and a snake talking to a little frog in the middle, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A little yellow frog on a leafy stalk, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: A snake and a little yellow frog in the bushes, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Mountains lining the river shore far away, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Enormous sea hugging the hills, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: A wavy tree stem with water collected in its hollow by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: A little frog talking to a snake, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: A snake and a frog moving towards a waterfall, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: Huge green mountains covered with forest trees, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: Grassy hillocks with steep fall, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: An owl sitting on a tree branch, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: Langur, hornbill, owl, macaque and frog sitting on tree branches, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 25: A bird flying away , by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 27: A big purple frog under a waterfall, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 28: A little yellow frog sitting on big leafy stalks, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 29: A frog leaping from one big leaf to another, a snake falling from a tree branch and a lizard perched on a rock, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 30: Two snakes on a tree, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 31: A big frog and a small frog together, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 32: Sunset seen through branches, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 33: Five frogs and a city skyline on a seashore, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 35: Two frogs, lizard and a snake together, by Maya Ramaswamy © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

फ़िलॉटस मेंढक का साहसिक सफ़रनामा

(Hindi)

पेड़ पर रहने वाला छोटा सा मेंढक फ़िलॉटस नीला समुद्र देखना चाहता है। समुद्र जंगल के बीचों-बीच खड़े बड़े पेड़ वाले उसके घर से बहुत दूर है। फ़िलॉटस के साथ पश्चिमी घाट की रोमांचकारी यात्रा करिये जहाँ मज़ेदार, मोटे और चौंका देने वाले प्राणियों की भरमार है। एक वन्यजीवन वैज्ञानिक की संवेदनशील परख से ओतप्रोत यह जंगली कथा आपका मन लुभा लेगी। सजीव चित्रांकन ने इसमें चार चाँद लगा दिये हैं।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at https://www.freekidsbooks.org
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?

https://www.freekidsbooks.org

Simply great free books -

Preschool, early grades, picture books, learning to read,
early chapter books, middle grade, young adult,
Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!

Always Free – Always will be!

Legal Note:

This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.

Please reach out and contact us if you want more information: https://www.freekidsbooks.org/about

Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.
This page is added for identification.